नवजागरण - हिन्दी और तेलुगु पत्रकारिता

आचार्या. किडांबि सीता लक्ष्मी

नवजागरण की शुरुआत प्रप्रथम बंगाल में हुई । इस नवजागरण की अभिव्यक्ति सर्वप्रथम बंग साहित्य में देखी जा सकती है । बंगाल के बाद महाराष्ट्र में नवजागरण के आंदोलन की लहर उठी । बंगाल और महाराष्ट्र के बहुत समय के पश्चात हिन्दी एवं देश के अन्य क्षेत्रों में नवजागरण का प्रभाव परिलक्षित होता है ।

साहित्य के साथ-साथ पत्रकारिता ने भी नवजागरण के मूल्यों को उजगार किया । नवजागरण और पत्रकारिता का अन्यान्य संबंध है । पत्रकारिता किसी भी विकासमान देश का एक सशक्त साधन है । यह अनेक गुत्थियों की कुंजी एवं सेतु भी है । नवजागरण का वाहक भी है । नवजागरण काल की पत्रकारिता ने नवजागरण को बढावा देने के साथ-साथ युग का पथ-प्रदर्शन भी किया । अपनी क्षेत्रीय स्थितियों, तत्कालीन वातावरण, सांस्कृतिक एवं भाषाई भिन्नता के कारण नवजागरण की अभिव्यक्ति भिन्न-भिन्न रूपों में हुई । इस तरह की अभिव्यक्ति में हर क्षेत्र की पत्रकारिता ने भाषा की उन्नति और साहित्य के विकास में अपना विशेष सहयोग दिया है ।

नवजागरण व्यापक सुधारवादी भावना का तर्कसंगत एवं विवेक सम्मत समर्थक रहा है । यह समर्थन युगीन आवश्यकताओं की पूर्ति की दृष्टि से हुआ है । सामाजिक सुधार आन्दोलन और नवजागरण का अन्योन्याश्रित संबंध है । नवजागरण आन्दोलन मूलतः व्यक्ति-स्वतंत्रता का आन्दोलन था । इसमें मध्ययुगीन धार्मिक, सामाजिक रूढ़िवादिता का विरोध है । सामाजिक रूढ़ियों और धार्मिक अंधविश्वासों में बंधे हुए व्यक्ति को स्वतंत्र कर उसे मुक्त करना ही नवजागरण का मौलिक लक्ष्य था । इसलिए दैवी अधिकारों के सिद्धांतों को चुनौती देना और दैवी चमत्कारों का पर्दाफ़ाश करना युगीन आवश्यकता बन गई है । राजतंत्र की समाप्ति और जनतंत्र का समर्थन नवजागरण की विशेष देन है ।

भारतीय नवजागरण की दो प्रधान प्रवृत्तियाँ हैं - 1. मध्यकालीनता के विरुद्ध संघर्ष 2. उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष । जहाँ तक साम्राज्यवाद या उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष

की बात है, वह संसार के सर्वाधिक शक्तिशाली अंग्रेजी शासन सत्ता के विरुद्ध संघर्ष है । सन् 1857 राष्ट्रीय स्वतंत्रता के प्रथम संग्राम ने विदेशी सत्ता की नींव हिला दी ।

सर्वप्रथम "स्वराज्य" की स्थापना के विचार से फरवरी सन् 1857 से "पैगामे आजादी" नाम से हिन्दी और उर्दू में एक पत्रिका प्रकाशित होने लगी थी । यह पत्रिका नियमित रूप से नहीं निकली । बहुत जल्दी ही यह पत्रिका बन्द हो गई । इसमें जो लेख छपते थे, वे जनता के हृदय में स्वतंत्रता-प्रेम और देश-भक्ति की ऐसी आग फूँक रहे थे कि जनता के शरीर में रक्त खौलने लगता था । यह पत्रिका धधकते शोले की तरह निकलती थी और इसमें मुर्दों में भी जान डाल देने वाली शक्ति होती थी ।

सन् 1857 में भारत के प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम का मूल कारण यही पत्रिका थी । प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम के प्रयास में इस पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान था ।

किन्तु पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्रीय चिन्तन को, स्वतंत्रता आन्दोलन के इस प्रथम प्रयत्न को, संग्राम के विफल होने और झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई के निधन के पश्चात, पाँवों तले कुचल दिया गया । **"पैगामें आजादी"** के प्रकाशक एवं मुद्रक "बेदार खाँ" को फाँसी की सजा दी गई थी । **"पैगामे आजादी"** पत्रिका जिस घर में पायी जाती थी, उन घर वालों को भी मौत के घाट उतार दिया जाता था । इतिहास ही इस तथ्य का साक्षी है कि **"पैगामे आजादी"** ने राष्ट्रीय चिन्तन की जागृति में कितना जबरदस्त काम किया था ।

झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई के निधन के चार वर्ष पश्चात हिन्दी पत्रकारिता ने अत्यन्त धैर्य और साहस के साथ फिर से अपना सर उठाया । इस साहस के पीछे केवल देश-भक्ति और प्रजाहित की कामना मात्र थी ।

सन् 1857 की विफलता के बाद भी राष्ट्रीय संघर्ष को चलाने का साहस पूर्ण काम प्रमुख रूप से समाचार पत्रों ने ही खुलकर किया है । इसी की अभिव्यक्ति अकबर ने अपनी चुटीली रीति से इस शेर में की है -

"खींचो न कमनों को न तलवार निकालो
जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो"

तोप के मुकाबलें में पत्रकारिता भीतर ही भीतर एक दूसरी सशस्त्र क्रांति - "गदर" की तैयारी कर रही थी । 1857 के प्रेस कानून ने अनेकों क्रांतिकारी पत्रकारों और पत्रिकाओं के संपादकों को बंद कर दिया । संपादकों को लंबे कारावास की सजाएँ मिलीं, प्रतिबंध लगाये गये, मगर **"स्वराज्य"** पत्रिका हिन्दी में ; **"देशाभिमानी"** पत्रिका तेलुगु में निकलती ही रही । "स्वराज्य" पत्रिका के मुख पृष्ठ पर यह हमेशा यह छपकर आता था कि

"लाख बाँधे तुम हमें जंजीर से
वकत पर निकलेंगे फिर भी तीर से ।"

हिन्दी और तेलुगु क्षेत्र में पत्रकारिता के माध्यम से नवजागरण की चेतना की अभिव्यक्ति को रेखांकित करना ही इस लेख का लक्ष्य है ।

भारतेन्दु युगीन प्रत्येक पत्रकार साहित्य-सर्जक था । इस युग के पत्रकारों ने भारतीय साहित्य का गहन अध्ययन कर, युग के लिए आवश्यक भारतीय आदर्श की प्रतिष्ठा की थी । अतीत और वर्तमान का समन्वय किया था । भारतीय अतीत और वर्तमान, पाश्चात्य चिन्तन धारा का समन्वय कर एक नव्य चेतना को जन्म दिया, जो युग की माँग थी । इस नव्य चिन्तन धारा से ओत-प्रोत लेखों से भारतीय जनता में जागृति हुई । समाज और राष्ट्र में नयी प्राणवत्ता का संचार हुआ । "इस युग की पत्रकारिता समग्रतः एक बृहत्तर भारत के निर्माण का श्लाघ्य प्रयत्न था । नई चेतना और शक्ति से प्रेरित भारतीय जनता राष्ट्रोद्धार की ओर अग्रसर हुई ।

पत्रकारिता के माध्यम से हमारे राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन को पर्याप्त सहयोग मिला । पत्रकारिता इस युग का एक शक्तिशाली अस्त्र था । जनहित के कार्य ही इस युग के पत्रकारों का एक मात्र लक्ष्य था । इस युग के कर्मठ पत्रकार, लेखन में सक्षम, निर्भीक, साहसी एवं स्पष्टवादी थे । पत्रकार अपने विशेष उद्देश्य को अपने लेखों के शीर्ष भाग में ही स्पष्ट कर देते थे ; जैसे **"स्वतंत्रता प्राप्ति"**, **"हिन्दी भाषा का विकास"**, **"धर्म की रक्षा"** आदि । सरकार की कटु आलोचना, देशभक्ति और स्वराज्य की कामना, भावी भारत की सुंदर कल्पना, दासता का क्षोभ आदि इस युग के पत्रों की कुछ सामान्य विशेषताएँ थीं ।

भारतेन्दु काल ने अनेक प्रकार की साहित्यिक प्रक्रियाओं और साहित्यकारों को जन्म दिया । साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना को बढ़ावा देना इस युग के साहित्य का लक्ष्य था । इसीलिए भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि में साहित्य-सृजन हुआ था । इस युग के प्रायः सभी पत्रकार साहित्यकार भी थे । उन्होंने साहित्य-सृजन के माध्यम से देशभक्ति का स्वर बुलन्द किया । नाटक, निबन्ध, कथा-साहित्य आदि सभी साहित्यिक विधाओं के द्वारा देशभक्ति का संचार किया गया ।

नाटक और निबन्ध इस युग के दो सशक्त साहित्यिक माध्यम थे । राष्ट्रीय-जागरण हर निबन्ध का सन्देश था । नाटक राष्ट्रीय भावधारा की सफल अभिव्यक्ति थी । इस तरह साहित्यिक-चेतना राष्ट्रीयता के समानान्तर पत्रकारिता के क्षेत्र में विद्यमान रही । राष्ट्रीयता का साहित्य और पत्रकारिता से अटूट सम्बन्ध था । इस युग के पत्र **"विवेचन सुधा"** आदि ने भारतीयों में समग्र राष्ट्र के चिन्तन को व्याप्त करने में विशेष योगदान दिया ।

हिन्दी पत्रकारिता का समुचित विकास **"कवि वचन सुधा"** के प्रकाशन से ही माना जाता है । **"कवि वचन सुधा"** एक उत्कृष्ट साहित्यिक पत्रिका थी । इसके साहित्यिक लेखों के माध्यम से समाज-सुधार, स्वभाषा, स्वदेशी तथा स्वराष्ट्र अभिमान को भी जागृत किया गया । यही नहीं, **"कविवचन सुधा"** ही वह पहली हिन्दी पत्रिका है, जिसने वैचारिक स्वतंत्रता और क्रांतिकारी भाव-बोध की जागृति की ।

भारतेन्दु के पश्चात् पं.बालकृष्ण भट्ट ने **"हिन्दी प्रदीप"** के माध्यम से राष्ट्रीय-चिंतन का प्रसार किया । राष्ट्रीय चिंतन से प्रदीप्त यह **"हिन्दी प्रदीप"** 33 वर्ष तक लगातार प्रकाशित होती रही । हिन्दी भाषा और राष्ट्रीय-चिन्तन में इस युग का योगदान अतुलनीय है ।

हिन्दी भाषा के प्रचार और राजनीतिक सुधार में **"बिहार बन्धु"** पत्रिका का सबसे महत्वपूर्ण योगदान है । विरोधी परिस्थितियों में भी अपने अथक परिश्रम से बिहार की कचहरियों में हिन्दी भाषा को स्थान दिलाने का श्रेय इस पत्रिका को है । इसकी सफलता के बारे में लिखते हुए सम्पादक शिवराम भट्ट जी लिखते हैं - "हमने अपने देश की जैसी

उन्नति चाही थी, वैसी उन्नति बिना देखे मरना पड़ा, पर मरते समय केवल एक बात का आनन्द है और यह आनन्द ऐसा है कि उसके सामने सब दुःख तुच्छ हैं । इस पत्र ने जन्म लेने के समय प्रतिज्ञा की थी कि बिहार की कचहरियों में हिन्दी जारी कराएँगे । ईश्वर की कृपा से इसका मुख्य उद्देश्य अच्छी तरह से पूरा हुआ ।"

द्विवेदी युगीन पत्र-पत्रिकाएँ राष्ट्रीय जनवादी चिंतन की पूर्ण अभिव्यक्ति देती हैं । ज्ञान की पत्रिका के रूप में **"सरस्वती पत्रिका"** का आविर्भाव हुआ था । लेकिन थोडे ही दिनों में इस पत्रिका का रूप परिवर्तित हो गया । पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के सम्पादन में इस पत्रिका ने सामाजिक और सांस्कृतिक समस्याओं का वैज्ञानिक विश्लेषण करके हिन्दी भाषी जनता को स्वाधीनता प्राप्ति की प्रेरणा दी । इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य था, भारतीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में **"जनवादी व्यवस्था"** को प्रतिष्ठित करना । इस तरह **"सरस्वती"** पत्रिका नव-जागरण की पत्रिका थी ।

भारत में उन्नीसवीं सदी में नवजागरण का श्रेय द्विवेदी युगीन पत्रकारों को ही है । इन पत्रकारों में अपने सम्पादन और लेखों से जनता को "नव जागरण" की ओर आकर्षित किया । जनता के सामने इन तथ्यों को स्पष्ट किया कि साक्षरता ही ज्ञान और संस्कृति का आधार है । शिक्षा या ज्ञानार्जन किसी एक वर्ग मात्र के लिए सीमित वस्तु नहीं है । शिक्षा के प्रसार का बीडा उठाकर इस युग के पत्रकारों ने यह प्रमाणित किया कि राष्ट्रीय भावना की जागृति के लिए, व्यापक सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा-प्रसार एक सशक्त साधन है । हजारीप्रसाद द्विवेदी जी ने अपने लेख "भारत में शिक्षा की दशा" में शिक्षा प्रसार के प्रति अपने विचार यों प्रकट किये थे - "शिक्षालय शिक्षा-दान के लिए हैं, भवन-निर्माण कला के नमूने दिखाने के लिए नहीं । प्राचीन भारत में इन बडी-बडी इमारतों के बिना भी शिक्षा दी जाती थी । हमें पक्के स्कूल और मदरसे नहीं चाहिए, हमें पोलो और क्रिकेट के मैदान नहीं चाहिए । चाहिए हमें शिक्षा, जो इनके बिना भी दी जा सकती है । उनके अनुसार भारत के नव-निर्माण का अर्थ है वैज्ञानिक दृष्टिवाले नये समाज का निर्माण । यह तभी संभव है जब देश की बहुसंख्यक जनता साक्षर होगी ।" गाँव-गाँव में निरक्षरता को दूर करने

के लिए और अंग्रेजी सरकार के विरोध में अपनी आवाज उठाने के लिए इस युग के पत्रकारों ने देश के कोने-कोने में साक्षरता-आन्दोलन को और वैज्ञानिक विचारवादी दृष्टिकोण को एक सशक्त साधन के रूप में प्रयोग किया ।

स्वराज्य और स्वभाषा का नारा भी इसी युग की देन है । स्वराज्य की स्थापना और राष्ट्रभाषा का विकास इस युग के पत्रकारों की महती देन है । हजारीप्रसाद द्विवेदी कहा करते थे - "स्वराज्य और स्वभाषा का गहरा सम्बन्ध है, बिना अपनी भाषा की नींव दृढ़ किए स्वराज्य की नींव दृढ़ नहीं हो सकती ।"

हिन्दी की तरह तेलुगु प्रांत में भी समाज सुधारवादी आंदोलनों के माध्यम से ही नवजागरण का दिशा-निर्देश हुआ था । 1860 के पश्चात् की पत्र पत्रिकाओं के अध्ययन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि "तेलुगु-पत्र पत्रिकाएँ भी हिन्दी पत्रिकाओं की भाँति भाषा और साहित्य के विकास के लिए कार्यरत हुई ।

भाषा की उन्नति और साहित्य के विकास के साथ सामाजिक कुरीतियों, रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों का निर्मूलन इन पत्रिकाओं का प्रधान लक्ष्य रहा जो नव जागरण का प्रभाव है ।

पत्र पत्रिकाएँ जन भाषा के प्रयोग के लिए प्रयत्नशील रहीं ।

"पुरुषार्थ प्रदायिनी", "आंध्र-भाषा संजीवनी", "विवके वर्धनी", "सकलविद्याभिवर्धनी" आदि तेलुगु पत्र-पत्रिकाओं ने तेलुगु भाषा की उन्नति एवं तेलुगु साहित्य के विकास के लिए महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया । हिन्दी की तरह तेलुगु पत्रकारिता ने भी साहित्य के विकास के द्वारा स्वभाषा, स्वदेशी तथा स्वराष्ट्र अभिमान को जागृत किया । तेलुगु पत्रिकाओं की विशेषता यह है कि नव जागरण के इस आंदोलन में सी.पी.ब्रौन नामक अंग्रेजी अफसर ने तेलुगु भाषा के अनेक प्राचीन काव्य ग्रंथों की पाठलोचना कराके उन्हें पत्रिकाओं में प्रकाशित किया । नाटक, निबंध, उपन्यास आदि नई विधाओं ने तेलुगु साहित्य को समृद्ध किया । ग्रन्थ-समीक्षा का अद्भुत विकास भी तेलुगु पत्रिकाओं में दिखाई देता था । तेलुगु में कहानी-कला के श्री गणेश का कारण भी पत्रकारिता ही है ।

भारतेन्दु की भाँति तेलुगु में भी वीरेशलिंगम सुधारवादी आन्दोलन के प्रवर्तक माने जाते हैं । सुधार वादी आंदोलन को तूफानी तेजी से आगे ले जाने का श्रेय श्री महान विभूति वीरेशलिंगम को ही है । भारतेन्दु जी और वीरेशलिंगम में इतनी अधिक समानताएँ मिलती हैं कि मानो नवजागरण की लहर ने पूरे देश को एक जैसा प्रभावित किया हो ।

सामाजिक रूढ़ियों, अंधविश्वासों एवं सामाजिक दुराचारों पर उन्होंने कुठाराघात किया । बालविवाह और विधवा विवाह संपन्न कराया । रूढ़ियों के विरुद्ध तेलुगु जनता के हृदय-परिवर्तन का श्रेय इस सुधारवादी आन्दोलन को ही दिया जाना चाहिए । आँध्र जाति के सांस्कृतिक नवजागरण के नेता वीरेशलिंगम ही थे । भारतेन्दु की तरह इन्होंने भी धार्मिक अंधविश्वास, छुआछूत, बालविवाह आदि के निर्मूलन के लिए महान सुधारवादी आन्दोलन चलाया । पत्रिकाएँ इस सुधार वादी आन्दोलन के वाहक थीं । हिन्दी की भाँति तेलुगु में भी पत्र-पत्रिकाएँ सुधार वादी आन्दोलन के वाहक थीं । वास्तव में इस नवजागरण के साथ ही तेलुगु पत्रकारिता का विकास हुआ । नव जागरण और तेलुगु पत्रकारिता के विकास ने तेलुगु भाषा की उन्नति और साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

'वृत्तांतिनी' तेलुगु की पहली साप्ताहिक पत्रिका थी । भाषा की दृष्टि से **'वृत्तांतिनी'** की भाषा शिष्ट व्यावहारिक तेलुगु थी । 1842 में **"वर्तमान तरंगिणी"** में भी सामाजिक समस्याएँ एवं सुधार संबंधी लेख लगातार प्रकाशित होते रहे । इस पत्रिका की विशेषता यह है कि पहली बार इस पत्रिका में तेलुगु व्याकरण और साहित्य संबंधी चर्चा का श्रीगणेश हुआ । तेलुगु के विख्यात वैयाकरणिक **चिन्नयसूरी** जैसे महान विद्वान द्वारा संपादकीय लेख लिखा जाना इसका आकाट्य प्रमाण है । तेलुगु पत्र-पत्रिकाओं की साहित्यिक सेवा का यह प्रथम प्रयास माना जाता था । **'सृजन रंजनी'** तेलुगु की प्रथम संपूर्ण साहित्यिक पत्रिका थी । जिस तरह हजारी प्रसाद द्विवेदी जी की पत्रकारिता में विद्यार्थियों के प्रयोजन को दृष्टि में रखकर भाषा एवं साहित्य संबंधी लेख लिखे जाते थे ; उसी तरह **चिन्नयसूरी** भी अपनी रचनाओं को इस पत्रिका में प्रकाशित करते थे और पत्रिका के मुख पत्र पर छापते थे कि **"विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के प्रयोजन हेतु ।"** भाषा की दृष्टि से **"सृजन रंजनी"** का

महत्वपूर्ण योगदान रहा कि इस पत्रिका में अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दों के लिए समानार्थी तेलुगु शब्दों का निर्माण किया करते थे ।

सन 1864 से 1870 तक **"तत्व बोधिनी"** नाम से एक पत्रिका निकलती थी । यह बंगाल में इस नाम से प्रकाशित **"तत्व बोधिनी"** का हूँ-बहू अनुकरण था । इस पत्रिका की विशेषता यह है कि यह पत्र **"ब्रह्म समाज"** के सिद्धांतों का प्रचार प्रसार करता था । **"ब्रह्म समाज"** के अनुयायी अपने सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ सामाजिक रुग्मताओं पर भी आवाज़ उठाते थे और उनका सक्त विरोध किया करते थे । इस पत्रिका में प्रकाशित स्त्री-पुनःर्विवाह संबंधी लेखों से युगद्रष्टा वीरेशलिंगम अत्यधिक प्रभावित थे । इस पत्र की विशेषता है कि इसने वेदों को भी पहली बार तेलुगु लिपि में प्रकाशित किया । ऋग्वेद के मंत्रों को भी स्वर सहित इसमें प्रकाशित किए ।

सन 1871 में **"आंध्र भाषा संजीविनी"** मासिक पत्रिका का शुभारंभ हुआ था । इसके प्रकाशक एवं संपादक श्री कोक्कोंड वेंकटरत्नम ग्रांथिक भाषा के बडे प्रेमी थे । इस पत्र के प्रधान लक्षण हैं :

1. तेलुगु भाषा और संस्कृति के प्राचीन वैभव का पुनरुत्थान ।
2. व्यावहारिक भाषा एवं समाज सुधारवादी आन्दोलन का विरोध करना ।

वीरेशलिंगम ने जिन सामाजिक सुधार के लिए आन्दोलन चलाए थे उनका यह सशक्त विरोध करता था । इसने स्त्री-विद्या का विरोध करने के साथ-साथ, विधवा-विवाह आदि का भी घोर विरोध किया । सामाजिक, राजनीतिक विवाद को लेकर रचे गये लेख भी प्रकाशित होते थे ।

"आंध्र भाषा संजीवनी" के संपादक थे कोक्कोण्ड वेंकटरत्नम् पंतुलु । वे विविध भाषाओं के प्रकांड पंडित और शास्त्र पारंगत थे । वे अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दों के लिए समानार्थी तेलुगु शब्दों का निर्धारण एवं तेलुगु पारिभाषिक शब्दों का निर्माण करते थे । तेलुगु पत्रिकाओं में संपादकीय लेखों की रचना का शुभारंभ करने वाले भी वे ही थे । पत्रिका के दायित्व के संबंध में कुछ नियम इस प्रकार से निर्धारित किये गये । यथा-मुद्रण, सौष्ठव,

सद्भाषा का प्रयोग, धर्म, नीति और न्याय तत्व समन्वित लेख, कृति की आलोचना, विभिन्न प्रकार की वार्ताएँ, शास्त्र सदाचार सिद्धान्त के अर्थ आदि विषयों से समन्वित होना पत्रिकाओं के लिए आवश्यक है । इसी प्रकार संपादक के लक्षणों का भी निर्धारण इस प्रकार से हुआ - पंडित, सत्यवर्तन, जगत् व्यापार में विज्ञ, धनवान, धैर्यवान, शक्तित्रय संपन्न, सूक्ति चतुर आदि सब गुणों से सम्पन्न व्यक्ति ही संपादक कहलाने का अधिकारी है ।

विभिन्न विधाओं में साहित्य के विकास के आशय से एक महान पत्रिका का जन्म हुआ था । वही सन् 1872 में उमारंगनायकुलु से संपादित और मचिलीपट्टणम से प्रकाशित **"पुरुषार्थ प्रदायिनी"** थी । यह पत्रिका बीस साल तक लगातार निकलती रही । यह एक मासिक पत्रिका थी । सन् 1874 में कंदुकूरि वीरेशलिंगम पंतुलु ने स्वयं **"विवेक वर्धनी"** पत्रिका की स्थापना की थी । **"आंध्र भाषा संजीवनी"** और **"पुरुषार्थ प्रदायिनी"** ये दोनों पत्रिकाएँ समाज के दो खेमों का प्रतिनिधित्व करती थीं । **"आंध्र भाषा संजीविनी"** में ठेठ ग्रान्थिक तेलुगु भाषा तथा सनातन, संप्रदाय का समर्थन एवं स्त्री-शिक्षा के विरोध में अनेक लेख प्रकाशित हुए । ठीक इसके विरुद्ध **"पुरुषार्थ प्रदायिनी"** में स्त्री-शिक्षा के समर्थन में अनेक लेख छापे गये । यही नहीं, **"पुरुषार्थ प्रदायिनी"** पत्रिका में, पुस्तक-समीक्षा, वेद, शास्त्र, भाषा, नीति, व्यापार, कला, खेती, गृहविद्या, देशकाल, जीवन, इतिहास, कहानी आदि अनेक अंशों के लेख छपते थे । इस युग में ऐसा एक भी क्षेत्र नहीं, जिसे पत्रिकाओं ने स्पर्श नहीं किया हो । विद्या और ज्ञान संबंधी उपर्युक्त दोनों पत्रिकाएँ बहुत जोर से चलती थीं । सामाजिक सुधार संबंधी दृष्टिकोण इन पत्रिकाओं की पहली विशेषता रही । समाज-सुधार ही इस युग की प्रत्येक पत्रिका का प्रधान लक्ष्य था ।

इन दोनों पत्रिकाओं की प्रतिस्पर्धा यहाँ तक चली कि एक दूसरे पर व्यंग्य बाण चलाने के लिए दोनों ने दो व्यंग्य प्रधान पत्रिकाओं की स्थापना की । **"हास्य वर्धनी"** को जवाब देने के लिए **"हास्य संजीविनी"** प्रकाशित होने लगी थी । इस तरह सनातन धर्म, आचार व्यवहार के विरोध में तथा नव जागरण की दिशा में तेलुगु पत्रकारिता ने एक विशेष मोड लिया था । एक-दो पत्रिकाओं को छोडकर सभी पत्रिकाएँ समाज-सुधार की भावना से

अभिभूत हुई । कंदुकूरि वीरेशलिंगम् पंतुलु (नव जागरण के पितामह और आधुनिक तेलुगु भाषा एवं साहित्य के निर्माता) के पदार्पण से तेलुगु पत्रकारिता में अति मुख्य परिणाम अत्यंत नाटकीय ढ़ंग से हो चले । व्यंग्य पत्रिकाओं का आविर्भाव समाज सुधार की पृष्ठभूमि में होना तेलुगु पत्रकारिता का वैशिष्ट्य है । 1876 तक तेलंगाना को छोड़कर अन्य सभी प्रदेशों से तेलुगु पत्रिकाओं का आविर्भाव हुआ । सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक क्षेत्रों में अत्यंत निर्भीकता के साथ समाचार का प्रकाशन कर **"विवेक वर्धनी"** (1874) के संपादक वीरेशलिंगम पंतुलु ने अपनी निर्भीकता का परिचय दिया था । निर्भीकता के साथ-साथ समाज सुधार इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य था । वे अपनी समस्याओं को अत्यंत निर्भीकता के साथ पत्रिका में प्रकाशित करते थे ।

"विवेक वर्धनी" के पश्चात् वीरेशलिंगम ने 1880 में **"चिंतामणी"**, **"सती हितबोधिनी"** (1883), **"सत्यवादी"** (1887) आदि पत्रिकाओं की भी स्थापना की । **"उत्तर राम चरितं"**, **"शाकुन्तलम्"** नाटक के अनुवाद भी इन पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए । वीरेशलिंगम् पंतुलु की महानता यह है कि इन्होंने ठेठ साहित्यिक ग्रांथिक तेलुगु के स्थान पर सामान्य सरल तेलुगु भाषा को पत्रिकाओं की भाषा बनाई । दूसरी विशेषता यह कि सरल तेलुगु भाषा में महान संस्कृत ग्रंथों के अनुवाद पत्रिकाओं में प्रकाशित करके, वेद, शास्त्र और साहित्य को पंडितों की सीमित सीमा से हटाकर, समान्य जन रंजन की वस्तु बना दी । **"साहित्य"** को समान्य जनता की पहुँच में लाने का श्रेय वीरेशलिंगम् को है ।

स्त्री जनोद्धरण के उद्देश्य से, स्त्री-शिक्षा के मात्र समर्थन के लिए नहीं, अपितु संपूर्ण विकास के लिए **"सति हितबोधिनी"** नामक महिला पत्रिका की स्थापना की गई । महिलाओं के लिए पत्रिका की स्थापना उस ज़माने में एक क्रांतिकारी कार्य था । तेलुगु पत्रकारिता के क्षेत्र में भी यह एक क्रांतिकारी निर्णय था । **"जनाना"** दूसरी महिला पत्रिका है । 1893 में **मल्लादि वेंकटरत्नम्** के निर्देशन में यह पत्रिका आरंभ हुई थी । 1898 में **"सरस्वती"** राजमंड्री से और **"वाग्वल्ली"** (1899) प्रकाशित होने लगी थीं । इस तरह बीसवीं शती के आरंभ तक तेलुगु पत्रकारिता का खूब विकास हुआ था । अनेक पत्र-पत्रिकाएँ

इस शती के आरंभ में शुरू हुई थीं । बीसवीं शती के आरंभ में **"कृष्णा पत्रिका"** (1902) **"आंध्र पत्रिका"** (1908) के कारण बीसवीं सदी के आरंभ में तेलुगु पत्रकारिता को स्थिरता, कीर्ति और दीप्ति मिली । तेलुगु के लिए **"आंध्र"** शब्द का प्रयोग करना यहीं से शुरू होता है ।

जिस तरह हिन्दी में नवजागरण आन्दोलन का नेतृत्व भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने किया, उसी तरह तेलुगु में वीरेशलिंगम जी ने किया । कारण यह है कि बंगाल के साथ दोनों का अतिनिकट संबंध था । हिन्दी और तेलुगु दोनों में राष्ट्रीय पत्रकारिता के स्थान पर साहित्यिक पत्रकारिता का सूत्रपात हुआ । दोनों क्षेत्रों की पत्रकारिता में राजनीतिक चेतना प्रधान पत्रिकाएँ 19 सदी के पूर्वार्ध में कांग्रेस पार्टी की स्थापना के पश्चात् ही दिखाई देती हैं । हिन्दी की पत्रिकाएँ **"वचन सुधा"** **"हरिश्चन्द्र चंद्रिका"** और तेलुगु की **"वृत्तांतिनी"**, **"वर्तमान तरंगिणी"**, **"सृजन रंजनी"** **"पुरुषार्थ प्रदायिनी"** आदि इस तथ्य के प्रमाण हैं । दोनों क्षेत्रों में स्त्रीशिक्षा का समर्थन बहुत जोर से हुआ । भारतेन्दु और वीरेशलिंगम दोनों के अपने-अपने पंडित मंडल थे । सब की अपनी-अपनी पत्रिकाएँ थीं । बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, प्रेमधन, राधाचरण गोस्वामी हिन्दी में उल्लेखनीय हैं । बालकृष्ण भट्ट का **"हिन्दी प्रदीप"**, प्रताप नारायण मिश्र जी का **'ब्राह्मण'** आदि अनेक पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी में, **"पुरुषार्थ प्रदायिनी"**, **"विवेक वर्धिनी"**, **"सरस्वती"**, **"आंध्र भाषा संजीविनी"**, **"देशाभिमानी"** आदि पत्रिकाओं के माध्यम से तेलुगु में नव जागरण की चेतना का प्रचार-प्रसार किया गया । नव जागरण को व्यापक बनाने में भारतेन्दु हिन्दी में और वीरेशलिंगम तेलुगु में अत्यधिक सफल रहे । इन दोनों ने सामाजिक आन्दोलनों के साथ-साथ ब्रिटिश न्याय पालिका में होनेवाले अनैतिक कार्यों और अन्यायों का भी खुलकर विरोध किया था ।

हिन्दी और तेलुगु दोनों क्षेत्रों में **"ब्रह्म समाज"** और **"आर्य समाज"** से प्रभावित दो खेमों के पत्रकारों के बीच के संघर्ष के परिणाम में, व्यंग्य एवं हास्य पत्रकारिता का भी उदय देखा जा सकता है । दोनों खेमों के मार्ग अलग-अलग होने पर भी हिन्दी और तेलुगु

दोनों क्षेत्रों में इन दोनों खेमों का लक्ष्य एक ही है । नव जागरण की चेतना को प्रतिबिंबित करते हुए आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि सभी विषयों पर नये दृष्टिकोण से विचार करना था ।

हिन्दी और तेलुगु दोनों ही क्षेत्रों में पत्रकारिता ने धार्मिक, मत मतान्तर के झगडे, अंधविश्वास, सामाजिक क्षेत्र में जाति-पाँत के भेद भाव, बालविवाह का विरोध, विधवा विवाह का समर्थन, स्त्री शिक्षा का समर्थन, स्वभाषा, स्वदेशी, स्व-संस्कृति तथा देश-भक्ति एवं राष्ट्रीय चेतना को साहित्य का विषय बनाया गया ।

इस तरह बंगाल की अपेक्षा हिन्दी और तेलुगु क्षेत्र में भी, साहित्यिक पत्रकारिता के माध्यम से ही, नवजागरण की अभिव्यक्ति संपूर्ण रूप से हुई ।

अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखपट्टणम - 530 003